उच्च शिक्षा
अमेरिकी सबक

फैडरेशन ऑफ इंडियन चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज द्वारा 23 मार्च 2006 को नई दिल्ली में आयोजित उच्च शिक्षा शिखर सम्मेलन में हार्वर्ड विश्वविद्यालय के अध्यक्ष लॉरेंस. एच. समर्स के उद्गारों के कुछ खास अंश:

सौजन्य: फिक्की

बाएं से: शिक्षा शिखर सम्मेलन के दौरान लॉरेंस एच. समर्स, फिक्की के प्रेसिडेंट सरोज कुमार पोद्दार और योजना आयोग के उपाध्यक्ष मोंटेक सिंह अहलूवालिया।

...मुझे उपलब्ध कराए गए उन कुछ आंकड़ों ने मुझे बहुत प्रभावित किया जिनसे पता चलता है कि भारत और अमेरिका के बीच एक साझी बात यह है कि 70 प्रतिशत शिक्षा सरकार द्वारा वित्तपोषित है और 30 प्रतिशत निजी क्षेत्र से। लेकिन उच्च शिक्षा के मामले में अमेरिका और भारत में बहुत साफ अंतर दिखाई देता है। 20 प्रतिशत भारतीय उच्च शिक्षा ही निजी तौर पर वित्तपोषित है जबकि 50 प्रतिशत से भी ज्यादा अमेरिकी उच्च शिक्षा निजी तौर पर वित्तपोषित है। ...यह इतना महत्वपूर्ण क्यों है ? ...

बुद्धिमता: कई मामलों में शिक्षा समाज की नींव और लोकतंत्र का आधार है।

समृद्धि : इसमें कोई संदेह नहीं कि समृद्धि और अर्थव्यस्था को गति दे सकने वाले संस्थानों के शीर्ष-पुरुषों को तैयार करने में उच्च शिक्षा की और ज्यादा केंद्रीय भूमिका होती जा रही है।

अवसर: किन्हीं भी परिस्थितियों में जन्मे लोगों को उच्च शिक्षा की ओर अग्रसर करने की मजबूत नींव उपलब्ध कराए बिना योग्यता और उत्कृष्टता पर आधारित अवसर की उस समानता के सृजन की कोई संभावना नहीं हो सकती जिस पर हमारे समाज की वैधता निर्भर है। अपनी उच्च शिक्षा प्रणाली को मजबूत बनाने के लिए आप अमेरिकी अनुभव के पांच सबकों पर विचार कर सकते हैं:

- अमेरिकी उच्च शिक्षा में गुणवत्ता और पर्याप्त निवेश की सबसे अहम गारंटी प्रतिस्पर्धा है... (उदाहरण के लिए) हमारा इतिहास विभाग निरंतर इस चिंता में लगा रहता है कि किसी दूसरे विश्वविद्यालय के कौन से इतिहासविद को उचित रणनीति अपनाकर, उचित वेतन और उचित पेशकश करके कैसे लुभाया जा सकता है... अमेरिकी शिक्षा पद्धति की उत्कृष्टता का एकमात्र कारण है छात्रों, अध्यापकों और अनुदान हासिल करने की जबर्दस्त प्रतिस्पर्धा। ...अमेरिका में संघीय स्तर पर विद्यार्थियों के लिए हम सीधी संघीय मदद में यकीन करते हैं। छात्र इस मदद को अपने मनपसंद संस्थानों में ले जा सकते हैं, फिर इन संस्थानों में सर्वश्रेष्ठ छात्रों को आकर्षित करने की होड़ लगती है.. ..

- अमेरिकी उच्च शिक्षा लचीलेपन और जवाब देने की क्षमता पर निर्भर करती है। प्राइमरी और सैकेंडरी स्तरों के उलट अमेरिका में उच्च शिक्षा में यह तय करने का कोई मानक नहीं है कि एक जरूरी पाठ्यक्रम क्या हो। वर्ष की शैक्षणिक गतिविधियों का क्रम भी नियत नहीं किया गया है। विश्वविद्यालय क्या-क्या उपलब्ध कराए, ऐसी शर्त भी नहीं है। अमेरिकी निजी संस्थानों में शीर्ष संचालकों का चुनाव अध्यापक वर्ग या छात्र वर्ग या कर्मचारियों द्वारा नहीं बल्कि स्वतंत्र न्यासियों द्वारा किया जाता है जो गुणवत्ता को प्रेरित करने का बड़ा कारण है। ....सफलता लचीलेपन पर निर्भर करती है। उदाहरण के लिए हार्वर्ड और अन्य नामी विश्वविद्यालयों में कोई निश्चित वेतन श्रृंखला नहीं है। जब एक असाधारण प्राध्यापक को असाधारण अवसर मिलता है, तो हम उसका वेतन बदल सकते हैं। बाजार की स्थितियों के कारण विभिन्न आयु वर्गों या विभिन्न क्षेत्रों में काम करने वाले लोगों के वेतन में दो या तीन गुना तक का अंतर हो सकता है। अपना पाठ्यक्रम बदलने के इच्छुक या दो विषयों के मेल से रचे क्षेत्र को अपना प्रमुख विषय चुनने के इच्छुक छात्रों को ऐसा करने की अनुमति होती है।

जॉन चेस © ए.पी.-डब्ल्यू. डब्ल्यू. पी.

हार्वर्ड परिसर के मेमोरियल हाल में खाना खाते विद्यार्थी।

- विश्वविद्यालय मुख्यत: सत्ता के विचारों पर नहीं, विचारों की सत्ता पर आधारित होने चाहिए.... किसी प्रश्न को पूछना असंभव नहीं होना चाहिए, ऐसा कोई विषय नहीं होना चाहिए जो पड़ताल के दायरे से बाहर हो, कोई भी मुद्दा ऐसा नहीं हो जिसे अंतिम रूप से तय मान लिया जाए, और कोई भी व्यक्ति बहस के दायरे से ऊपर या बाहर नहीं होना चाहिए।

- सामान्य लोक-उपकार होना चाहिए। अमेरिका के हार्वर्ड जैसे संस्थान को बनाए रखने की हमारी क्षमता, निजी उच्च शिक्षा की प्रणाली को बनाए रखने की अमेरिका की क्षमता उन संपन्न व्यक्तियों पर निर्भर है जो उस संस्थान के प्रति अपने दायित्व को पहचानते हैं, जिसने उन्हें जिंदगी में मौका दिलाया, या जो समाज को कुछ लौटाना चाहते हैं या जो किसी ऐसे उद्देश्य को बढ़ावा देना चाहते हैं जिसमें उनकी गहरी आस्था है। यह कर छूट से लेकर सरकारी अधिकारियों की मनोवृति तक में झलकने वाली सरकार की उन नीतियों पर निर्भर है जो व्यक्तिगत उदारता का सम्मान और स्वागत करती हैं और उससे भयभीत नहीं होतीं।

- शोध और व्यवसायिक शिक्षा के साथ ही सफल विश्वविद्यालय अंडरग्रेजुएट अध्ययन पर भी केंद्रित रहते हैं। विश्वविद्यालयों का उद्देश्य मात्र विद्यार्थियों को प्रशिक्षित करना नहीं, बल्कि नया ज्ञान प्रदान करना है। □